OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:49 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -22 अंक - 12 सितम्बर -II-2020 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

नवरात्रि से नवयुग की ओर प्रस्थान....

जैसे जनक की बेटी जानकी, द्रुपद की बेटी द्रोपदी वैसे ही महाकाल शिव की बेटी महाकाली को हम याद करते हैं। शिव जो सभी का परमपिता है, उसका हरेक बच्चा देवी या देवता के रूप में ही होना चाहिए। तभी तो शास्त्रों में इन आत्माओं को साधारण होते हुए भी अलौकिक और दिव्य दिखाया गया। ये दिव्यता गुणों की है, शक्तियों की है, पवित्रता की है। अगर ये हमारे अन्दर हैं तो हम भी एक साधारण मानव से देवत्व की ओर अपने आप को चलता हुआ पायेंगे। इस नवरात्रि पर क्यों न हम भी गुणों और शक्तियों को धारण कर उस महिमा मंडल में शामिल हो जायें।

वैसे हर त्यौहार व हर मुहूर्त प्रभात के दौर में होते हैं। परन्तु नवरात्रि ही एक ऐसा त्यौहार है, जो लगातार नव दिवस तक रात्रि में ही मनाया जाता है। रात्रि में ही शक्तियों के गायन-वंदन की परम्परा है अथवा रात्रि को जागरण, स्मरण इत्यादि की जो परिपाटी चली आती है, उसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण इतिहास छिपा हुआ है। वास्तव में 'रात्रि' शब्द, उस रात्रि का वाचक नहीं है जो चौबीस घंटे में एक बार आती है, बल्कि यह उस 'रात्रि' का बोधक है जो 'शिवरात्रि' के नाम से भी प्रसिद्ध है। लाक्षिक दृष्टि से सतयुग और त्रेतायुग को 'ब्रह्मा का दिन' कहना चाहिए, क्योंकि उस काल में जन जीवन प्रकाशमय होता है, अज्ञान अंधकार से आवृत नहीं होता है और विकारों की कालिमा से भी आच्छादित नहीं होता बल्कि सतोगुणी होता है। और 'सत्' नाम प्रकाश का है। द्वापर और कलियुग को 'ब्रह्मा की रात्रि' कहना उचित है, क्योंकि इन दो युगों में मनुष्य अज्ञानान्धकार में होते हैं और तमोगुण नाम अधंकार का है।

'नवरात्रि' अज्ञान अंधकार का तोड़

ऐसे ही अगर हम आज देखें तो चारों ओर अज्ञान अंधकार का ही दौर नज़र आ रहा है। कोरोना एक ऐसी महामारी की बीमारी है जिसका तोड़ किसी मनुष्य के पास नहीं है। अनिश्चितता के बादल मनुष्य के मन मस्तिष्क पर मंडरा रहे हैं। प्रकृति का तांडव भी दिखाई दे रहा है। मनुष्य का आपस में वैर वैमनस्य, ईर्ष्या, अनाचार, अत्याचार, लूट-खसौट इत्यादि का बोलबाला है। आज रक्षक ही भक्षक बन गये, ऐसी कई अखबार में खबरें छपती रहती हैं। मनुष्य अपनी मानवता को दरकिनार कर एक-दूसरे पर हिंसक बन गया है। ऐसे काल खण्ड में हम जा पहुँचे हैं, जिसको हम एक शब्द में कहें अज्ञान की रात्रि तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जहाँ अधंकार होता है वहीं प्रकाश की आवश्यकता होती है। दिन में दीये जलाने की आवश्यकता ही नहीं। ऐसे में मनुष्य अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का संचार करने के लिए शक्तियों से वर मांगते हैं। उसी की यादगार में नवरात्रि त्यौहार मनाया जाता है। मनुष्य नवरात्रि के दिन व्रत, जागरण कर शक्तियों की आराधना करते हैं।

शक्तियां अर्जित करने का पर्व

विजयदशमी से पहले नवरात्रि में जो शक्तियों की पूजा होती है, उसका भी कुछ अर्थ है। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन मांगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है तो उससे बुद्धि का वरदान मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति का वरदान मांगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति भी आन्तरिक चाहिए, क्योंकि विकार भी आन्तरिक दुर्बलता से ही उत्पन्न होते हैं। अब यह दुर्गा इत्यादि जिनका कीर्तन करते समय लोग उनसे शक्ति तथा बुद्धि बल मांगते हैं, वास्तव में वें थीं कौन? वास्तव में वे देवियां शिव की संतान थीं, जो 'शिव शक्तियां' अथवा 'ब्रह्मापुत्रियाँ' कहलाती थीं।

अम्बिका और काली का उदय

'दुर्गा सप्तशती' में लिखा है कि - "पूर्व काल में 'शुम्भ' और 'निशुम्भ' नामक असुरों ने जब इन्द्र से तीनों लोकों का राज्य छिन लिया था तो देवताओं ने हिमालय पर जाकर 'विष्णु माया' की स्तुति की। उस समय पार्वती जी के शरीर से एक देवी प्रकट हुई इन्हीं का नाम 'अम्बिका देवी' या शिवा देवी हुआ। ये हिमालय पर बैठी थीं। असुरों की सेना को आते देखकर इन्हें क्रोध आया तो इनका मुख काला पड़ गया और वहाँ से तुरन्त विकरालमुखी 'काली' देवी प्रकट हुई। उसकी जीभ लपलपाने वाली थी। वह सबका भक्षण करने लगी। वे अंकुशधारी महावतों, योद्धाओं और घंटा - सहित कितने ही हाथियों तथा घोड़ों को पकड़ मुंह में डाल लेती और चबा डालती। इन्होंने बहुत असुरों को मार डाला।" सार रूप में इनका आध्यात्मिक रहस्य-आसुरियता पर देवत्व की विजय।

स्वयं में शक्तियों का दीप जलाने का त्यौहार नवरात्रि

परमात्मा शिव को 'महाकाल' भी कहते हैं। जैसे राजा जनक की बेटी जानकी और राजा द्रुपद की बेटी द्रोपदी कहलाती थी, वैसे ही महाकाल परमात्मा 'शिव' की पुत्री को 'महाकाली' कहा गया है। इन देवियों के हाथ में अस्त्र-शस्त्र भी दिखाते हैं। क्या ये देवियां संहार करती थीं? नहीं ना! माँ कभी अपने बच्चों का संहार नहीं करती। माँ का हृदय ममता और दया से भरा होता है। वह हिंसक बली कैसे स्वीकार करेगी! माँ ने तो ज्ञान-खड्ग से अज्ञान का सिर काटा था अथवा बलि ली थी। जिसकी यादगार में इसे तलवार दे दी है। माँ ने तो आत्मा की ज्ञान-ज्योति जलायी थी, तो हाथ में दीपक दे दिया गया है। इन देवियों के हाथों में जो भी अलंकार हैं वे आध्यात्मिक शक्ति के चिन्ह हैं। तो दशहरे से पहले देवियों का पूजन रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त किये होने का यादगार है।

तो आइए हम अपने अज्ञान अंधकार को मिटाएं और आत्म दीप में ज्ञान घृत डालकर जागती ज्योत बनें। न होगा अंधकार, न लगेगी ठोकर परिणामस्वरूप बन जायेंगे ठाकुर। तो इस नवरात्रि के पावन पर्व को अपने आपमें ज्ञान का उजाला करने का दृढ़ संकल्प लेकर मनायेंगे ना!

प्रभु प्रेम...और पवित्रता

आज हर मनुष्य को ये मालूम है कि शांति सिर्फ परमात्मा के सानिध्य से ही मिलेगी। वो उसे प्राप्त करने के लिए पूजा-अर्चना कर रहा है, मन्दिरों में, तीर्थ स्थानों पर जाकर माथा टेक रहा है। परन्तु कहते हैं ना कि चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे। ठीक वैसी ही हालत आज के मनुष्य की है। परन्तु उन्हें ये नहीं मालूम कि परमात्मा से मिलें कैसे, ये उनके ज़हन में पूर्णतः स्पष्ट ही नहीं है। वह भावना के आधार से ढूंढ तो रहा है, परन्तु उससे भेंट नहीं कर पा रहा। चाहे विद्वान हो, साधारण हो या फिर पढ़े-लिखे। वे जानते ही नहीं कि प्रभु से कैसे मिला जाये। वह उसकी खोज में साधु-संत के पास भी जाता है, परन्तु वहाँ भी उसे घिसा-पिटा ही उत्तर मिलता है। जिससे वो न ही सन्तुष्ट होता और न ही उसकी चाहत पूरी होती। होती भी कैसे, क्योंकि किसी को उस तक पहुंचने की सही विधि ही नहीं मालूम।

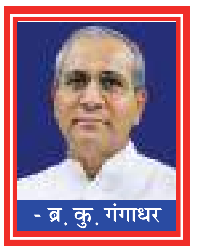

- ब्र. कु. गंगाधर

आज हम जानेंगे उसे पाने की सहज और सरल विधि। तो सबसे पहले प्रभु प्रेम की प्यास बुझानी है तो अपने जीवन में छोटी-सी एक बात को अपनाना होगा और वो है पवित्रता। पवित्रता ही प्रभु प्यार पाने की एक चाबी है। स्वच्छता तो सबको प्रिय है। कहते हैं ना कि जहाँ स्वच्छता है, वहाँ प्रभु का वास है। पवित्रता अपनाइये और प्रभु प्यार पाइये, बस इतना ही तो करना है, तैयार हैं ना... ! अब हम जानते हैं उसकी विधि।

ये भी कहते हैं ना कि प्रभु हमारे दिल में बसता है। दिल हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। जो सारे शरीर का संचालन करता है। दिल में थोड़ी-सी भी अशुद्धता आई तो व्यक्ति अनकम्फर्ट महसूस करता है ना! हृदय शुद्ध है तो शरीर स्वस्थ है। शुद्ध रखना पहली शर्त है। ठीक वैसे ही प्रभु प्रेम के पात्र बनना माना पवित्रता का होना। अब यहाँ बात आती है कि पवित्रता तीनों रूपों से हो-तन, मन और धन। क्योंकि ये तीनों ही साधन हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। तीनों में पवित्रता का होना माना परमात्म प्रेम पाने के अधिकारी बनना।

इसी कड़ी में हम पवित्रता को और थोड़ा विस्तार से जानेंगे कि पवित्रता है क्या? पवित्रता वह शक्ति है जिसे प्राप्त कर लेने पर कुछ भी बाकी रह नहीं जाता। परन्तु घूम-फिर के यही बात सामने आ जाती है कि पवित्रता आखिर है क्या?

पवित्रता कई सारी बातों को अपने में समाये हुए है। अगर हम सोचेंगे तो इस निष्कर्ष तक पहुंचेंगे कि पवित्रता के आधार से ही हमारा जीवन चलता है। हम वास्तव में हैं ही पवित्र स्वरूप। हमारा मूलतः स्वरूप ही परमपवित्र ज्योति स्वरूप है। जिसको हम आत्मा कहते हैं। अगर आज हम दुःखी हैं तो इसका मूल कारण अपवित्रता है। तभी तो कहते हैं कि पवित्रता सुख-शांति की जननी है। माना पवित्रता अपनाने से ही सुख-शांति और समृद्धि की उत्पत्ति होती है। हम सभी चाहते भी हैं कि हमारे जीवन में इन तीनों की प्रचुरता हो। और उसे पाने के लिए ईश्वरीय पढ़ाई पढ़नी होगी। डिग्री तो पढ़ाई से ही मिलती है ना! बिना ईश्वरीय पढ़ाई के पवित्रता की प्राप्ति हो नहीं सकती।

हमें उसे अपनी दिनचर्या में शामिल करना ही होगा। उसका एक तरीका ये भी है कि सुबह उठते ही हमें अपने पवित्र स्वरूप को देखना है। हम वास्तव में हैं ही परमपवित्र स्वरूप। संकल्प करना है कि मैं एक परमपवित्र आत्मा हूँ...। मैं इस धरा पर परमशक्ति परमेश्वर की परम रचना हूँ...। मैं महान हूँ...। मेरा जन्म ही महान कार्य के लिए हुआ है...। मेरा कार्य विशुद्ध महानता को मानवता में बिखेरना है...। मैं एक दिव्य शक्तियों का पुंज हूँ...। सारे संसार को दिव्यता की खुशबू से आलौकित करना ही मेरा परम कर्म व धर्म है...। इस तरह संकल्प करने से भीतर से अलौकिक शक्तियों का उदय होगा। जिससे जहान को ये अलौकिक शक्तियां देने में हम समर्थ होंगे। आप अगर रोज़ उठते ही पहले 15 मिनट भीतर में मौजूद प्रभु प्रदत्त शक्तियों को देखेंगे, अनुभव करेंगे तो आप पायेंगे कि अरे वाह! यह तो भगवान ने सारा प्रबन्ध करके ही मुझे धरा पर भेजा है। परन्तु हम अपनी कमज़ोरियों की पूर्ति के लिए बाहर ढूंढते रहे। अब मुझे अहसास हुआ कि परमात्मा ने जो मुझे जीवन में आवश्यकता है, उसका पहले से ही इंतजाम कर रखा है। इस तरह रोज़ अपने अन्दर मौजूद शक्तियों से ओत-प्रोत होते रहेंगे तो आप में एक अलग ही ऊर्जा का संचार होगा। और अन्दर में जो भी कमियां हैं, कठिनाईयों से जूझ रहे हैं, समस्याओं में उलझ रहे हैं उनका समाधान अपने आप ही होता जायेगा। फिर आपका जीवन तरोताज़ा व ताज़गी से भर जायेगा। आप में बहुत बड़े सपनों को साकार करने की प्रबल इच्छा जागृत होगी। और होगी भी क्यों ना! जहाँ पवित्रता है, प्रभु का साथ है वहाँ सिद्धि परछाई की तरह साथ होगी। इस तरह करना कोई कठिन तो नहीं है ना! सरल है ना! कर सकते हैं ना! भगवान से हमारा रिश्ता ही पिता और पुत्र का हो गया। और जिसका पिता ही परमात्मा हो उसका कहना ही क्या! जो प्रभु का है वो हमारा है। क्योंकि हम उसके बच्चे हैं ना! तो पिता का वारिस तो बच्चा ही होता है ना! तो देखा एक पवित्र संकल्प ने प्रभु प्राप्ति करा दी।

दिल से कहो मेरा बाबा तो बाबा हाज़िर हुज़ूर है

बाबा को याद हर कोई करता है, लेकिन बात ये होती कि हम बाबा को याद करते कैसे! बाबा को शिकायत करते कि बाबा आप हमारी सुनते नहीं, पर हमें ये भी तो पता होना चाहिए ना कि बाबा सुनते क्यों नहीं, उसका कारण क्या है ये हमें जानना है।

परमपिता शिव परमात्मा हमारी माता भी है और पिता भी है तो वह वर्सा कैसे देते हैं? यह गाड़ी, मोटर, टी.वी. आदि यह तो लौकिक बाप भी देता है लेकिन यह तो अल्पकाल का है। आज हमारी कार ठीक है तो बड़ा सुख देती लेकिन चलते-चलते रूक जाये तो बड़ी मुसीबत होती है। वर्सा लौकिक मात-पिता भी देते हैं लेकिन परमात्मा पिता हमको वर्से में सदाकाल के लिए सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम जो जीवन में चाहिए, वह सब दे देता है। किसी से भी पूछो कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? तो कहेंगे मैं सुखी रहूँ, शान्त रहूँ और मेरा परिवार भी शान्त और सुखी रहे - यही तो लक्ष्य है ना! तो सदाकाल के सुख और शान्ति का वर्सा वह पिता के रूप में दे रहा है और फिर कहते हैं तुम ही सखा भी हो, बंधु भी हो। दुनिया में भी आपस में फ्रेंड ज़रूर बनाते हैं और जो बात मात-पिता से नहीं कर सकते, वह फ्रेंड से करते हैं। और फ्रेंड से बात करने से दिल हल्का हो जाता है। हम लोगों ने अनुभव किया है कि कोई भी बात मन में आये तो बाबा को अपना फ्रेंड समझ करके दिल की जो भी बात हो उसे सुनाकर हल्का हो जाओ। अगर दूसरे से करेंगे तो फिर भी डर होता है कि कोई भी किसी को सुना सकता है। एक का कोई एक ज़रूर होता है और वह एक का एक, एक का एक होते काफी लम्बी बात हो जाती है। लेकिन परमात्मा के साथ जो मन की बातें की वह और किसी को पता चल नहीं सकती, क्योंकि वह सागर है, वह समा लेता है। तो फ्रेंड से ऐसा होना चाहिए जो साथ देवे और समावे भी, बात को फैलाये नहीं। तो बाबा हमारा फ्रेंड भी है। कोई भी दिल की बात और कैसे भी करें। भल कोई छिपाने की बात हो, वह आप बाबा के साथ फ्रेंड रूप में करो। कई मतलब से भगवान को याद करते हैं। जब कोई बात होगी तो कहेंगे बाबा आप ही मेरे हो, बाबा आप ही क्षमा करो, आप ही यह करो और जब बात पूरी हो गयी तो आप परमधाम में और मैं इस दुनिया में, पूरा हो गया, तो मतलब की याद हुई ना! तो मतलब से याद करने का वह रेसपॉन्ड नहीं देता है। दिल की याद का रेसपॉन्ड वह फौरन ही देता है क्योंकि हम सबने अनुभव किया है। बाबा से फ्रेंड रूप में बातें करो तो वह भारी दिल को भी ऐसे हल्का कर देगा जैसे आपने साकार में कोई से बात की। लेकिन इतना संबंध जुटेगा तब, जब अपने को आत्मा समझेंगे, क्योंकि आत्मा का संबंध परमात्मा से है। लेकिन करते क्या हैं मानो बहुत व्यर्थ संकल्प चल रहे हैं, अवस्था क्रोध, लोभ में या कोई भी विकार के वश है, बॉडी कॉन्शियस हैं और याद करते हैं परमात्मा को, वो विदेही और आप देह-अभिमान में तो संबंध कैसे जुड़े? वह सुने तो कैसे? तो पहले बॉडी कॉन्शियस को तो हटाओ। दिल से अपने को आत्मा समझकर अगर आप बाबा कहेंगे तो बाबा है ही आपके लिए। फखुर रखो कि मेरे लिये ही बाबा है, मेरा बाबा है।

दादी हृदयमोहिनी
मुख्य प्रशासिका

एकमत, एकरस और एकानामी का मंत्र सदा याद रखो

दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

''हमारा परम मित्र एक बाबा है, इसलिए कभी भी एक के सिवाय किसी को अपना मित्र नहीं बनाओ, खुदा को ही सच्चा दोस्त बनाओ।''

बाबा ने हम सबको एक मंत्र दिया है - एकमत, एकरस और एकानामी। यह मंत्र सबको याद होगा। अब हरेक पूछे - पहली-पहली हमारी एकमत है कि हम एक के हैं। दो के, चार के नहीं। तो सबके दिलों में एक श्रीमत रहती है। एक श्रीमत है हमारी मुरली। तो हम सभी एक श्रीमत के अनुकूल पढ़ाई और धारणा रखते हैं। हम सब एकमत में रहते हैं? जहाँ एक मत है वहाँ द्वेत नहीं, द्वेष नहीं, राग नहीं। जब एक मत है तो न हमारी अनेकता है, ना कोई भेद है। जहाँ भेद है, वहाँ झगड़े हैं। जब हम एक के हैं तो न कोई भेद है, न कोई ईर्ष्या है, न कोई से नफरत है, न कोई से मन में ग्लानी है, न वैर-विरोध है। मेरे मन में कोई भी दो मत नहीं। जहाँ एकता है, वहाँ ईश्वर है। हमारे बीच एक बाबा है, इसलिए दो मत नहीं। हमारा परम मित्र एक बाबा है, इसलिए कभी भी एक के सिवाय किसी को अपना मित्र नहीं बनाओ, खुदा को ही सच्चा दोस्त बनाओ। एकरस स्थिति न होने का कारण एक की याद में हम समाये हुए नहीं हैं। एक की याद में रहो तो एक ही हमारा प्यारा है। सब रस एकरस में समाये हैं। सर्व सम्बन्धों का रस उनसे लो, सर्व शक्तियों का रस भरने वाला एक बाबा है। इसलिए सदा एक बाबा दूसरा न कोई - याद करो, उसमें रहो तो कोई मोह-ममता रहती ही नहीं। कर्मेन्द्रियाँ भी शान्त हो जाती। किसी भी प्रकार का रस अपनी ओर आकर्षित नहीं करता। किसी को कनरस चाहिए, किसी को मुख का रस, किसी को जीभ का रस चाहिए, किसी की बुद्धि दूसरों की सूरत में जाती, उसके नयन दूसरों की सूरत देखते, सीरत नहीं। हमारे को बाबा ने कहा है इन कानों से मधुर बोल सुनो, दूसरी बातें नहीं सुनो, दूसरे रसों में नहीं जाओ। जब हमारी खुमारी एक है फिर दूसरी बातों में क्यों जाते? अपनी खुमारी में रहो। बाबा कहता मैं तुम बच्चों का ऑबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। हम भी कहते बाबा हम भी आपके ओबीडियन्ट स्टूडेन्ट हैं। ऑबीडियन्ट माना कदम-कदम आपकी श्रीमत पालन करूंगा। फिर हम कैसे कहते बाबा हम आपकी यह आज्ञा पालन नहीं कर सकते। बाबा की डेली आज्ञा है, बच्चे तुम्हें अपार खुशी रहनी चाहिए। खुशी हमारा खज़ाना है। जब बाप की श्रीमत पर चलते तब कहेंगे ऑबीडियन्ट स्टूडेंट।

जो पुरूषार्थ में सदा ऑनेस्ट हैं वो कभी भी स्वयं से नाउम्मीद नहीं होंगे

दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

हमारे बोल में ऑनेस्टी कैसे हो? क्योंकि ऑनेस्टी में जितनी सच्चाई है उतनी सफाई है, उतना ही स्पष्टीकरण भी है। ऑनेस्टी से पुरुषार्थ में बहुत मदद मिलती है। ज्ञानी हो, चाहे अज्ञानी हो, ऑनेस्टी सबको प्यारी लगती है। अन्दर से आत्मा मान लेती है कि ऐसा ऑनेस्ट हमने कहीं नहीं देखा। बहुत गुण भले न हों, ऑनेस्टी संबंध में, व्यवहार में, दृष्टि-वृत्ति में हो। ऑनेस्टी वाला आज्ञाकारी भी है तो वफादार व ईमानदार भी है। वह न सिर्फ माँ-बाप का आज्ञाकारी बनता है परन्तु किसी भी कार्य में हाँ जी कहना उसको अच्छा लगता है और औरों का जैसे हक हो जाता है। कोई ऑर्डर नहीं करते, लेकिन इज्जत रखते हैं क्योंकि अपना समझते हैं। तो जितना आज्ञाकारी रहो उतना संबंध में वफ़ादारी हो। करोबार में ईमानदारी हो। अगर संबंध ही हमारा अच्छा नहीं है, कभी रूठते हैं, कभी स्नेह में रहते हैं तो हमारे कारोबार में ईमानदारी नहीं रह सकती। अगर ईमानदारी है तो आज्ञाकारी बनने की सभ्यता वाले बन जाते हैं, सभ्यता का संस्कार बन जाता है। उसका माइन्ड कभी चेंज नहीं होता। उसके लिए हर बात इजी होती है। कोई कैसा भी कार्य होगा तो उसको प्यार से करेगा, करने का अभ्यास हो जाता है। खुद में विश्वास भी बैठता है, इससे औरों का भी विश्वास बैठ जाता है कि यह करेगा और उसको फिर सहयोग भी मिल जाता है। तो आज्ञाकारी बनने से कोई हमारे ऊपर बहुत काम नहीं आ जाता है। स्नेह लेने के पात्र हो जाते हैं, सहयोग मिलने लग पड़ता है। ऑनेस्टी का गुण अगर हमारी लाइफ में आ जाता है तो लगता है मैं ईश्वर का बच्चा हूँ। दूसरे को भी यह भान आता है कि यह भगवान का बच्चा है। तो पहले मैं अपने आपसे ऑनेस्ट रहूँ, फिर भगवान से। मैं अपने से ऑनेस्टी से बात करूँ, अपने से ठगी न करूँ, ऊपर-ऊपर से पुरुषार्थ न करूँ, काम चलाऊ न रहूँ। तो विचार करना है कि मैं अपने से ऑनेस्ट कैसे बनूं! मुझे अपने आप अन्दर आइने में दिखाई पड़े कि मैं क्या हूँ, बाबा क्या है! वह तब होगा जब तीसरी आँख खुले। ऑनेस्टी आँख खोलती है- अपने को देखने के लिए। वृत्ति-दृष्टि चेंज कर लेती है। ऑनेस्टी से अपने आपको साक्षी होकर देखेंगे तो अपनी कमी, कमज़ोरी स्पष्ट दिखाई देगी। अन्दर से इच्छा उठे कि इसे निकालूँ। मैं अपने आपको ही जैसे ब्लैसिंग देती हूँ, निकल जायेगी। एक बार ध्यान पर आया, अब निकल जायेगी। ऑनेस्टी से अपने आप से बात करूँ तो जो कमी कमज़ोरी है, वह खत्म हो जायेगी। ऑनेस्टी हमको निराश होने नहीं देती है। जो कभी ना उम्मीद बनते हैं, सोचते हैं कि कितना पुरुषार्थ किया है, अभी तक सफलता नहीं मिली है, माना वो अपने से ऑनेस्ट नहीं है। ऑनेस्ट बनने से ऐसा रिकॉर्ड बन जाता है जो पुरुषार्थ का हर संकल्प पूरा होता है। सेवा के लिए तो अच्छे-अच्छे संकल्प आते हैं। हम अपने पुरुषार्थ को ऑनेस्टी से देखें कि ऐसा पुरुषार्थ है और इतनी सफलता है? नहीं है तो मैं खुद से ऑनेस्ट नहीं हूँ।

मैं अपने से ऑनेस्टी से बात करूँ, अपने से ठगी न करूँ, ऊपर-ऊपर से पुरुषार्थ न करूँ, काम चलाऊ न रहूँ।

दस हरायें और दशहरा मनायें

विश्व में भारत ही एक ऐसा खण्ड है, जहाँ हर त्यौहार मनाया जाता है। यहाँ के त्यौहार आध्यात्मिक रहस्य लिए हुए होते हैं। हर त्यौहार कुछ न कुछ नयी प्रेरणा व उमंग दिलाता है। परंतु इस श्रृंखला में एक त्यौहार जो अनोखा है, अनोखा इसलिए क्योंकि कोई भी त्यौहार हमें जीवन में नई प्रेरणा देता है परन्तु ये जो त्यौहार है, ये हम शत्रु का मनाते हैं, जिसे दशहरा कहते हैं। मनुष्य याद किसे करता है? या तो कोई हमारे विशेष स्नेही हैं उसे या फिर कोई शत्रु है उसे।
मानव की शक्तियों को तराशने का आधार हमेशा विपरीत फोर्स ही रहा है। जब किसी की कसौटी ही न हो तो कैसे मानें कि इसमें ये योग्यता है। कोई कसौटी न होती हो तो उसके जीवन में निखार कैसे आयेगा?
जैसे बच्चा पढ़ाई करता फिर परीक्षा देता है, तभी अगली क्लास में ट्रांसफर होता है, यदि परीक्षा ही न हो तो उनकी योग्यता की परख कैसे हो?
योग्यता की परख कसौटी पर कसने से ही होती है।

» दसानन के रहस्य को जानें

देखा जाये तो बुत हमेशा दुश्मन का ही जलाया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि यह रावण शत्रु है कौन? और इसे हर वर्ष जलाते क्यों? साधारण रीति से किसी को पूछा जाये कि रावण कौन था? तो यही उत्तर मिलता है कि लंका का राजा था। जो इतना शक्तिशाली था कि उसने जल, अग्नि, वायु और काल को अपने पलंग के पाँवों से बांध रखा था। उसे दशानन अर्थात् दस सिर वाला भी कहते हैं। परन्तु क्या यह बात सत्य हो सकती है कि किसी व्यक्ति के दस सिर हों? ऐसा व्यक्ति भला सोता कैसे होगा? खाता कैसे होगा? यदि रावण दस सिर वाला था, तब तो उसके वंश का कोई दस सिर न सही, चार-पांच सिर वाला दिखाई देना ही चाहिए था! वास्तव में रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। न ही दस सिर वाला कोई मनुष्य होता है। रावण वास्तव में माया का प्रतीक है। और इसके दस सिर माया के काम, क्रोध, लोभ... आदि पाँच विकार नर में और इन्हीं पाँच विकारों की नारी में प्रवेशता का सूचक है।

यदि रावण कोई सचमुच का राजा विशेष होता तो उसे एक बार जलाने से ही काम पूरा हो जाता, परन्तु ये माया का ही अलंकारिक प्रतीक है, इसलिए इसे हर वर्ष जलाते आये हैं, जब तक कि ये रावण सचमुच जल न जाये।

» दस को हरायें और मनायें

दशहरा अर्थात् नर-नारी के दस विकारों को हराना। सच्चा दशहरा तभी होता है जब रामेश्वर परमात्मा, पतित मनुष्य आत्माओं को पुनः पावन अर्थात् निर्विकारी बनाकर सच्चे राम राज्य की पुनःस्थापना करते हैं। दशहरे को विजय-दशमी भी कहते हैं। विजय-दशमी का भावार्थ है, दस पर विजय पाना। मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों, इन दस के द्वारा विकारों के वशीभूत होकर ही विकर्म करता है। अतः विकारों पर विजय पाना ही विजय-दशमी है।
रावण का भावार्थ ही है रूलाने वाला। हमारे जीवन में कितनी ऐसी घटनायें होती रहती हैं, जो कि हमें दुःख देती हैं। क्रोध वश, काम वश न जाने हमारे से कितनों को दुःख पहुँचता है। यदि हम एक दिन को देखकर हिसाब करें तो सुबह से शाम तक हमारे से कितनों को दुःख पहुँचता है? एक दिन को ही देखें, हमारे व्यवहार से, हमारी सोच से, हमारे कर्म से, कितने दुःख के बीज बोते हैं। अगर ऐसी प्रवृत्ति है तो उसे देव-तुल्य प्रवृत्ति नहीं कहेंगे ना! जब देव-तुल्य नहीं तो फिर आसुरी ही होगी ना! जब ऐसी भावनाएँ लिये मनुष्य इस धरा पर विचरण करता है, तो उसे क्या कहा जाये?
आप समझ ही गये होंगे! हम क्या कहना चाहते हैं? तो विजय-दशमी का त्यौहार हमें ये प्रेरणा व सीख देता है कि हमारे अन्दर की आसुरीयता का खात्मा कर, उस पर विजय पाना। तो इस दशहरे के त्यौहार को दश+हरा कर मनायेंगे ना! तभी तो हमारे जीवन में सुख, शान्ति का साम्राज्य आयेगा। क्या सोच रहे हैं? जो दस चीज़ें आपको दुःख दे रही हैं उन्हें भी संजोकर रखना चाहते हैं क्या? नहीं ना! तो भला देर किस बात की! तो आइए अपने को भीतर में झांके और झकोरें, कहीं कोने में छिपी हुई इन चीज़ों को निकाल बाहर फेंके। अन्यथा रावण की कोई एक चीज़ भी हमारे अन्दर छिपी हुई रह गई तो वो रूलायेगी ही। तो इसीलिए आप अपने को कैसा बनाना चाहते हैं रोने वाला या रूहानियत की खुशबू फैलाने वाला, ये आपके हाथ में है। बस! देर मत करिए इसी घड़ी, इसी वक्त दृढ़ संकल्प की तिली से इसे जलाकर तिलांजलि दे दें।

शांतिवन। स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी। सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय व साथ हैं अन्य भाई-बहनें।

सोनीपत-बाडोली। रक्षाबंधन पर्व पर विधायक मोहन लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रमोद।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर एस.एच.ओ.अशोक कुमार,थाना डौकी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि।

भीनमाल-राज.। रक्षाबंधन पर्व पर जस्टिस पुनाराम बिशनोई को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व तिलक लगाते हुए ब्र.कु. गीता।

भरतपुर-राज.। स्वतंत्रता दिवस पर विश्व शांति भवन में तिरंगा फहराते हुए ब्र.कु. कविता। कार्यक्रम में उपस्थित हैं लक्ष्मीनारायण रिटायर्ड मुंसरिम, बालमुकुंद सैनी, रिटायर्ड प्रिंसिपल, जुगल किशोर सैनी,सैनी समाज विकास समिति जिलाध्यक्ष तथा ब्र.कु. प्रवीणा।

शान्तिकुंज-चरखी दादरी(हरि.)। जन्माष्टमी पर्व पर सजाई चैतन्य झांकियों के साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेम बहन तथा अन्य।

बेंगलूरू-कर्नाटक। जन्माष्टमी पर्व पर सम्बोधित करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु.पदमा तथा साथ हैं डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. लीला,चित्तूर।

राजनांदगांव-छ.ग.। स्वतंत्रता दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ वरदान भवन में तिरंगा फहराने के पश्चात् स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

चेन्नई-अडयार(तमिलनाडु)। स्वतंत्रता दिवस पर सजाई भारत माता की चैतन्य झांकी। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका मुथुमनी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। जन्माष्टमी पर्व पर श्री कृष्ण मूर्ति को झूला झुलाते हुए ब्र.कु. मंजू।

OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:49 AM Page 3

OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:49 AM Page 4

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जैसा चिंतन वैसा स्वरूप

> **जैसे एक रिकॉर्डर होता है तो हम उसमें जो भी रिकॉर्ड करेंगे वो रिकॉर्ड हो जायेगा और जब भी उस रिकॉर्ड को बजायेंगे तो वही बार-बार बजेगा, जो हमने रिकॉर्ड किया। ठीक ऐसे ही आत्मा भी एक रिकॉर्डर है। इसमें जो रिकॉर्ड करेंगे वही हो जायेगा। लेकिन रिकॉर्ड क्या करना है अच्छा या बुरा। इस पर हमें ध्यान देना है।**

जब हम किसी के बारे में सोचते हैं तो हमारा अटेन्शन वहाँ रहता है। जिस किसी की कमज़ोरी हम देखेंगे तो हमारे वायब्रेशन किससे कनेक्ट हो जायेंगे? सिर्फ उससे नहीं कनेक्ट होंगे उसकी कमज़ोरी से भी कनेक्ट होंगे। परमात्मा कहते हैं जिसका चिन्तन करोगे वो आपके चित्त पर रहना शुरू हो जायेगा। मान लीजिए एक फूल है हम उसका चिंतन करना शुरू करते हैं कि वाह! कितना सुन्दर फूल है, जैसे ही हमने ये बोला कि ये बहुत सुन्दर है, ये बोल नहीं सकते जब तक सोचें नहीं। पहले संकल्प करेंगे फिर हम बोलेंगे। सुन्दर क्या था, फूल। जब हमने ये थॉट क्रियेट की कि ये बहुत सुन्दर है तो ये अब सुन्दर कहाँ है? वो सुन्दर थॉट यहाँ(मन में)है, फूल वहाँ है। लेकिन हमने फूल का चिंतन किया, अच्छा वाला चिंतन किया तो वो अच्छे वाले थॉट कहाँ गये? यहाँ(मन में)। तो जिसका चिंतन करेंगे वो कहीं और नहीं यहाँ(मन में) बैठेगा।

अब हम कहें कि ये फूल तो मुरझाया हुआ है। फूल वही है लेकिन ये दूसरा थॉट। ये बहन कैसा फूल लाई है जो आधा सूखा है, आधा फ्रेश। तो थॉट कहाँ है? यहाँ(मन में)। तो जैसा चिंतन करेंगे हम वैसे ही बन जायेंगे। आज नहीं तो कल मुंह से निकल जायेगा। अब जब निकल जायेगा तो अब वो किसी ओर के चित्त पर बैठ जायेगा। जो हम सोचेंगे, जो हम बोलेंगे वो सिर्फ हमारे चित्त पर नहीं, वो औरों के चित्त पर भी बैठेगा। अब अगर हम एक साथ मिलकर एक थॉट क्रियेट करते हैं तो हम सबके कैसे वायब्रेशन जायेंगे उस फूल पर? अच्छे वाले जायेंगे ना! तो फूल क्या हो जायेगा अच्छे वाले वायब्रेशन लेकर थोड़ा और सुन्दर हो जायेगा। क्योंकि हम सबने उसकी विशेषता को देखा और उसकी विशेषता को चित्त पर रखा, फिर उसकी विशेषता को बोला, औरों ने उस विशेषता को सुना। फिर उन्होंने उसको अपने चित्त पर रखा, सबने उसकी विशेषतायें बोली तो सबका चित्त भी खिल उठेगा और वो फूल भी और खिल जायेगा। और अगर इकट्ठे मिलकर हमने कहा ये फूल तो मुरझाया हुआ है, तो क्या हो जायेगा फूल को? इतने सब कहेंगे कि कैसा फूल है, कैसा फूल है। तो क्या हो जायेगा उसको? मुरझा जायेगा ना! लेकिन फूल के ऐसा होने से पहले हम मुरझाये हुए होते हैं। जब हम किसी की विशेषता देखते हैं, अच्छा सोचते हैं, अच्छा बोलते हैं तो उसको कहा जायेगा दुआएं देना। ब्लेसिंग्स से सामने वाला क्या हो जाता है? ऊंचा उठ जाता है। अभी हमें ये करना है कि जिसको भी देखेंगे उसके अन्दर सबकुछ गलत दिख रहा हो तो 10 सेकंड पोज करके उसके अन्दर की एक अच्छी चीज़ को ढूँढेंगे फिर मन कहेगा कि ये ऐसा-ऐसा क्यों करता है? मन को कहें स्टॉप। और कहें कि इनके पास ये वाली क्वालिटी भी है। मन को 2 बार, 10 बार, 20 बार ये करने के बाद पता चल जायेगा कि हम गलत वाली बातें सुनने में इन्ट्रस्टेड नहीं हैं।

अगर मन दुबारा किसी के बारे में थोड़ा भी गलत सोचना शुरू करे तो 10 सेकंड पोज कर उस दाग को, उसी टाइम साफ करना चाहिए। दाग भी एक थॉट है और साफ करना भी एक थॉट है। लेकिन आपको पता हो कि माइंड जैसा आज्ञाकारी कोई नहीं है। हम ऐसे ही कहते रहते हैं कि मेरा मन तो मेरा कहना नहीं मानता है। मेरा मन तो हर कहना मानता है लेकिन महत्वपूर्ण ये है कि हमने मन को निर्देश क्या दिया। क्योंकि आप उसे जो निर्देश देंगे वो ही वो करेगा।

अब बात करते हैं लक्ष्मी की कि लक्ष्मी कहाँ आयेगी? ये नहीं कि दीवाली वाले दिन चाहे कितने भी दरवाजे-खिड़की खोल कर रखो तो लक्ष्मी आ जायेगी। लक्ष्मी कहाँ रहती है, वो दिव्यता कहाँ है? हमारे अन्दर। अगर उस दिव्यता को इमर्ज करना है तो कोई भी पुरानी बात पकड़ कर नहीं रखेंगे, किसी की कमज़ोरी को अपने अन्दर नहीं रखेंगे। नहीं तो दिव्यता नहीं आयेगी। कोई भी पुरानी बातें हैं उनको खोलो, उनको दबाके नहीं रखो। अगर बात दबी रही तो एक बात याद रखना कि इस शरीर में कचरा पकड़े रखा। आत्मा शरीर छोड़ेगी और आगे दूसरा शरीर लेगी तो अपने साथ क्या ले जायेगी? उसने मुझे उस दिन ऐसा कहा था। ये लेकर जायेगी अपने साथ। इसलिए ये हमें तय करना है कि हमें अपने अन्दर क्या रखना है। जो यहाँ रखेंगे वहीं हम आगे लेकर जायेंगे।

कादमा-हरियाणा। स्वतंत्रता दिवस पर बाढ़ड़ा उपमंडल प्रशासन द्वारा आयोजित समारोह में कोरोना महामारी, पर्यावरण एवं जल संरक्षण क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने पर ब्र.कु. वसुधा को प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित करते हुए उपमंडल अधिकारी प्रीतपाल सिंह मोठसरा एच.सी.एस.।

सादाबाद-उ.प्र.। स्वतंत्रता दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के 'शिव शक्ति भवन' में तिरंगा फहराने के पश्चात् समूह चित्र में भाजपा जिला महामंत्री सुनील गौतम, बिसावर डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. ज्वाला सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. मिथलेश, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. राधा तथा अन्य।

झोझूकलां-कादमा(हरि.)। रक्षाबंधन पर्व पर थाने में एस.एच.ओ. दलबीर सिंह व अन्य पुलिसकर्मियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. वसुधा तथा ब्र.कु. ज्योति।

जालंधर-पंजाब। स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् चैतन्य झांकी भारत माता के साथ ब्र.कु. रेखा तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। जन्माष्टमी पर्व पर सजाई श्री कृष्ण की चैतन्य झांकी के साथ क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. प्रेम दीदी, ब्र.कु. रमा दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

कथा सरिता

प्रभु से शिकायत

एक व्यक्ति का दिन बहुत खराब गया। व्यक्ति ने रात को प्रभु से प्रार्थना की, प्रभु क्रोध न करें तो एक प्रश्न पूछूँ? प्रभु ने कहा कि जो पूछना हो पूछो। व्यक्ति ने कहा प्रभु! आपने आज मेरा पूरा दिन एकदम खराब क्यों किया? प्रभु हँसे और पूछा, पर हुआ क्या? व्यक्ति ने कहा, सुबह अलार्म नहीं बजा, मुझे उठने में देरी हो गई। प्रभु ने कहा, अच्छा फिर। व्यक्ति ने कहा, देर हो रही थी, उस पर कार बिगड़ गई। मुश्किल से रिक्शा मिली। प्रभु ने कहा, अच्छा फिर!
व्यक्ति ने कहा, टिफिन ले नहीं गया था, वहाँ कैंटीन बंद थी। एक सैंडविच में ही पूरा दिन निकाला, वो भी खराब थी। प्रभु केवल हँसे। व्यक्ति ने बात आगे बताई, मुझे काम का एक फोन आना था और फोन खराब हो गया। प्रभु ने पूछा, अच्छा फिर! व्यक्ति ने कहा, विचार किया कि जल्दी घर जाकर ए.सी. चलाकर सो जाऊं, पर घर पहुँचा तो लाइट गई थी। प्रभु! सब तकलीफें मुझे ही! ऐसा क्यों किया मेरे साथ?
प्रभु ने कहा देखो, मेरी बात ध्यान से सुनो। आज तुझपर कोई बड़ी भयंकर आफत थी, जो देवदूत को भेजकर मैंने रुकवाई। अलार्म बजे ही नहीं ऐसा किया। कार से एक्सीडेंट होने का डर था, इसलिए कार को बिगाड़ दिया। कैंटीन में खाने से फूड पॉइज़निंग हो जाती। फोन पर बड़ी काम की बात करने वाला आदमी तुझे बड़े घोटाले में फँसा देता, इसलिए फोन बंद कर दिया। तेरे घर में आज शॉर्ट सर्किट से आग लगती, तू सोया रहता और तुझे खबर ही नहीं पड़ती। इसलिए लाइट बंद कर दी। मैंने यह सब तुझे बचाने के लिए किया। व्यक्ति ने कहा, प्रभु! मुझसे भूल हो गई। मुझे माफ कीजिए। आज के बाद शिकायत नहीं करूँगा। प्रभु ने कहा, माफी माँगने की आवश्यकता नहीं, परन्तु विश्वास रखना कि मैं हूँ न। मैं जो करूँगा, जो योजना बनाऊंगा, वो तेरे अच्छे के लिए ही होगी। जीवन में जो कुछ अच्छा-बुरा होता है, उसकी समझ लम्बे समय के बाद आती है।

OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:50 AM Page 5

शक्तियों द्वारा कमज़ोरियों पर विजय

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कितना अद्भुत लगता है जब हम अपने ही अन्दर की कमज़ोरियों को, अपने ही अन्दर समायी हुई शक्तियों द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। मुझे महात्मा बुद्ध के जीवन की एक बात याद आती है। एक दिन महात्मा बुद्ध वृक्ष के नीचे तपस्या कर रहे थे। एक व्यक्ति ने वहाँ आकर उनको खूब गालियां दी। महात्मा बुद्ध के शिष्य को अन्दर ही अन्दर बहुत गुस्सा आ रहा था कि इस व्यक्ति को चुप करा दें, लेकिन महात्मा बुद्ध वहीं शांत मुद्रा में बैठे थे। लास्ट में उस व्यक्ति ने महात्मा बुद्ध से कहा कि आपने सुना मैंने क्या कहा? महात्मा बुद्ध मुस्कुराते हुए कहने लगे कि भाई तुमने जो कुछ भी दिया, मेरे काम की तो एक भी चीज़ नहीं थी। इसलिए मैंने उसको स्वीकार ही नहीं किया। मुझे तो तुम पर दया आ रही है। तुम पर प्रेम जागृत हो रहा है और मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया। जो ये प्रेम और क्षमा का गुण था, उसी के कारण महात्मा बुद्ध को क्रोध नहीं आया। सहनशक्ति और बढ़ गई। दुनिया के अन्दर देखते हैं कि जिस वृक्ष के ऊपर फल लगे होते हैं ना, तो वो झुका हुआ होता है। वो छांव देता है, फल की प्राप्ति होती है। बच्चे आते हैं, उस वृक्ष को पत्थर मारते हैं। लेकिन पत्थरों को सहन करके वो वृक्ष फल ही देता है। यहाँ तक कि जो लकड़हारा जिस वृक्ष को काटने आता है, वो पहले उसी वृक्ष की छांव में बैठकर आराम करता है, फिर काटता है। सहनशक्ति इतनी महान शक्ति है कि जो उसको काटने वाला है उसको भी पहले सुख का अनुभव कराता है। तो इसीलिए ये सहनशक्ति बहुत महान है। व्यक्ति को महानता के शिखर पर पहुँचा देती है। दुनिया में जितने भी महान व्यक्ति हुए इसी शक्ति के माध्यम से ही तो महान हुए और तभी तो संसार के हर व्यक्ति को क्षमा करते ही गए, उन्हें कभी गुस्सा नहीं आया। लेकिन सहनशक्ति के साथ-साथ दूसरी शक्ति समाने की भी बहुत आवश्यक है। कई बार क्या होता है व्यक्ति सहन तो कर लेता है ये उसकी महानता है, लेकिन समा नहीं पाता। जाकर किसी और के सामने जो अन्दर चल रहा है उसका वर्णन कर देता है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए एक घर में सास और बहू है। सास ने कुछ कहा और बहू ने सहन कर लिया, जवाब नहीं दिया ये उसकी महानता है। लेकिन वो सारी बात अपने में समा नहीं

दुनिया में जितने भी महान व्यक्ति हुए इसी शक्ति के माध्यम से ही तो महान हुए और तभी तो संसार के हर व्यक्ति को क्षमा करते ही गए, उन्हें कभी गुस्सा नहीं आया।

पायी। इसलिए पड़ोस में या तीसरे घर में जाकर जहाँ उसका आना-जाना था, वहाँ जाकर सारी बात उसने कह दी कि ऐसा-ऐसा हुआ, मेरी सास ने मुझे ऐसा कहा। अपना मन तो हल्का कर लिया लेकिन जब घर आती है, और फिर उसका कहीं बाहर जाना होता है तो वो पड़ोसी जिसको बहु ने सारी बातें बताई थी, वो उनके घर आकर उसकी सास को कुछ सलाह देने लगते हैं। ऐसे नहीं करना चाहिए, वैसे नहीं करना चाहिए। तो सास पूछती है कि आपको कैसे पता चला, हमारे घर में तो सब ठीक है! तब वो पड़ोसी कहते हैं कि आपकी बहु आई थी तो उन्होंने ही ये सब बताया।

अब आप सोचो कि जैसे ही वो पड़ोसी जायेगा और तभी बहू आती है तो अब सास का स्वरूप कैसा होगा? इस तरह से फिर आग में घी डालने जैसा कार्य हो जाता है। और वो आग भड़क उठती है। बातों को सहन तो कर लेते हैं लेकिन उन बातों को समा नहीं पाते तो वो बहुत बड़ा स्वरूप ले लेती हैं। और जब बहुत बड़ा स्वरूप ले लेती है तो उसके बाद परिस्थिति को सम्भालना कभी-कभी बहुत मुश्किल होता है। समाने की शक्ति के लिए कौन-कौन से गुणों की आवश्यकता है। समाने की शक्ति के लिए आवश्यक है - हमारे अन्दर गम्भीरता की और हृदय की विशालता की। जितनी गम्भीरता, हृदय की विशालता है उतना हर बात को समाते जायेंगे और बहुत सुन्दर अनुभव करेंगे।

जिस तरह समुद्र विशाल है और अनेक नदियों का किचड़े वाला पानी अपने में समाता जाता है, समुद्र कभी नदियों को ये नहीं कहता कि तुम अपना किचड़ा मेरे में क्यों डाल रही हो! लेकिन समुद्र खुद भी वो किचड़ा नहीं रखता है। भारी चीज़ वो अपने गर्भ में समा लेता है और हल्की चीज़ होगी तो लहरों के द्वारा किनारे पर फेंक देता है। अपने में नहीं रखता है। ठीक इसी तरह इस शक्ति को विकसित करने में हम अपने जीवन में एक ऐसी कमज़ोरी पर विजय प्राप्त कर लेते हैं जो एक आग की तरह है। जिसमें इंसान खुद जलता है। वो है ईर्ष्या। ईर्ष्या के ऊपर विजय प्राप्त करना सहज हो जाता है। जो व्यक्ति अपने अन्दर समाता जाता है उसका मूल्य समाज के अन्दर तो क्या परिवार में भी बहुत रिस्पेक्टफुल हो जाता है।

अध्यात्म यही कहता है कि अगर हमें अपनी पर्सनल बातें करनी हैं तो वो भगवान से करें, उसको सुनाते जायें। राजयोग हमें यही सिखाता है कि जब हम उसे ईश्वर को दे देते हैं तो हमारा मन हल्का हो जाता है। और ईश्वर इतना वफादार है कि वो हमारी पर्सनल बात कभी किसी को कहेगा नहीं। तो इसीलिए कहा समाने की शक्ति - गम्भीरता और हृदय की विशालता से आती है। और ईर्ष्या रूपी अवगुण के ऊपर हम विजय पा लेते हैं।

! यह जीवन है !

सादगी सर्वोत्तम सुन्दरता है, क्षमा अतुलनीय बल है, नम्रता सर्वश्रेष्ठ गुण है एवं मैत्री सर्वोत्कृष्ट सम्बन्ध है। सभी गुणों से बनता है उत्तम व्यक्तित्व। हम अपने क्षेत्र के कितने भी बड़े खिलाड़ी क्यों न हो गए हों लेकिन स्वयं को हमेशा विद्यार्थी बनाकर रखिए ताकि ज्ञान का उजाला पाने की खिड़कियां हमारे लिए हमेशा खुली रहें। ज़रूरी नहीं कि श्रम से ही इंसान थक जाए, कभी-कभी ख्यालों का बोझ भी इंसान को थका देता है मन जब भी कमज़ोर हो तब प्रभु को याद करें, ज़रूर प्रेरणा भी मिलेगी और मन भी शक्तिशाली बनेगा।

सोनीपत-हरियाणा। रक्षाबंधन पर्व पर एम.पी. रमेश कौशिक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रमोद। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता।

भुवनेश्वर-फोरेस्ट पार्क(ओडिशा)। रक्षाबंधन पर्व पर वी.वी. राव एयरपोर्ट डायरेक्टर,बिजू पटनायक,इंटरनेश्नल एयरपोर्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता।

छोटा उदेपुर-गुज.। रक्षाबंधन पर्व पर एस.पी. धर्मेन्द्र शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोनिका शर्मा।

नीमच-म.प्र.। स्वतंत्रता दिवस पर ज्ञान सागर परिसर में सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. सुरेन्द्र। चित्र में साथ हैं उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सविता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

टोंक-राजस्थान। रक्षाबंधन पर टोंक सवाई माधोपुर सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अपर्णा।

ओम शान्ति मीडिया वर्ग पहेली - 21(2019-2020)

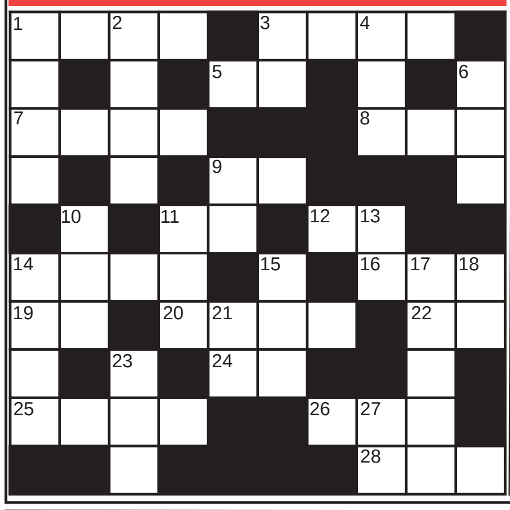

- ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

ऊपर से नीचे

1. अंदाज, संशय (4)
2. ईश्वर, परमात्मा, भगवान (4)
3. ...देश का रहने वाला (2)
4. दैवी गुणों वाला पुरुष (3)
6. बच्चों को...करते हैं,बाबा कितने निरहंकारी (3)
9. संसार, जगत, दुनिया (2)
10. सामर्थ्य, विशाल, शक्ति (3)
11. तेरी...में हमें रहना, शरण (3)
13. यज्ञ के आदि रत्नों में से एक भाई का उपनाम (2)
14. पुष्पराज, एक विशेष रत्न, इंद्र लोक की एक परी (4)
15. उपस्थित, उपलब्ध (3)
17. परोपकार करने वाला (5)
18. धूल, गर्द, पराग (2)
21. आत्मा की मुख्य कर्मेन्द्रिय (2)
23. ... से निहाल कींदा स्वामी (3)
27. बगुला, कुबेर (2)

बाएं से दाएं

1. बाप से सर्व सम्बन्धों के रस का...बढ़ाते रहना है (4)
3. दूर तक की बात सोचने वाला, जागरूक (4)
5. राष्ट्रीय पक्षी (2)
7. मानवीय गुण, सज्जनता (4)
8. शिक्षा, समझानी (3)
9. पानी, नीर (2)
11. ....बिनु चले सुने बिनु काना, पैर (2)
12. छवि, सजावट, सौंदर्य (2)
14. बुलाना, आवाज़ देना (4)
16. स्वर्ग कोई....नहीं है, उर्ध्व दिशा (3)
19. बाबा तुझे इक....लिखता हूँ, पत्र (2)
20. अपने.....को बाबा का परिचय दो, साथी, सखा (4)
22. प्रतिदिन, प्रत्येक दिवस (2)
24. ....से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनना है (2)
25. सारा सृष्टि चक्र ही इस समय....भूत अवस्था को प्राप्त हो गया है (4)
26. ....मालिक एक फिर क्यूं बंटा हुआ संसार है, सभी का (3)
28. पास, नज़दीक (3)

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- - 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

थकना मना है

"सोच के देख सकते हैं कि जब मैं कभी थकता हूँ या परेशान होता हूँ तो उसका रिज़न क्या है। बैठे-बैठे ऑटोमेटिक बिना सोचे-समझे हमारे विचार इधर-उधर चलने लग जाते हैं। तो मुश्किल से 10-12 सेकण्ड बाद जो काम कर रहे होते हैं तो उसमें भी हमारा मन नहीं लगता....."

जिस प्रकार आज हमारे पास बहुत सारे ऐसे टूल्स हैं जिसमें यूट्यूब है, फेसबुक है, ट्वीटर है। साथ ही साथ जो भी सोशल मीडिया के थ्रू हम या गूगल के थ्रू अपनी हेल्थ को बहुत अच्छा रखने की कोशिश करते हैं और कर भी रहे हैं। आज के दौर में खासकर आज का जो समय चल रहा है इसमें और ज़्यादा लोग हेल्थ कॉन्शियस हैं। डरे हुए हैं। कहीं निकल नहीं रहे हैं। सबकुछ वैसा चलना चाहिए जैसा वो चाह रहे हैं फिर भी बेचारे वो उस पर काम भी कर रहे हैं। लेकिन फिर भी कभी न कभी लगता है कि बैठे-बैठे थकावट हो रही है, शरीर थक रहा है और सोने का मन कर रहा है। उठना नहीं चाहते, कुछ करना नहीं चाहते तो इस पर एक बहुत अच्छे साइंटिस्ट का अनुभव है कि इस दुनिया में व्यक्ति की जो शारीरिक थकावट होती है वो 5 प्रतिशत होती है। मानसिक थकावट 95 प्रतिशत है। उन्होंने इसको बहुत सुन्दर एक्सप्लेन किया था कि जो कर्म हम बहुत इन्वॉल्व होकर करते हैं, जिस कर्म में हम बहुत ज़्यादा अच्छे से, गहराई से जुड़े होते हैं उस कर्म को करने से हमें कभी भी थकावट नहीं हो सकती। ये अमेरिकन साइंटिस्ट थे जिन्होंने एक बहुत अच्छी बात कही और एक बहुत अच्छे मानव शास्त्री हुए। हर्बर्ट स्पेंसर जो सोशल एक्टिविटी को बहुत अच्छा एक्सप्लेन कर रहे थे उन्होंने भी ये बात कही कि जब व्यक्ति अपने सोशल कार्यों में बहुत ज़्यादा इन्वॉल्व होता है तो कहीं से भी वो थक नहीं सकता, क्योंकि थकावट मानसिक है न कि शारीरिक।

अब इसका जो वैज्ञानिक पहलू है वो ये है कि व्यक्ति जब बहुत ज़्यादा किसी थॉट के साथ जुड़ा रहता है और वो काम नहीं कर पाता। उसके अगेंस्ट जो भी इधर-उधर के विचार आते हैं वो विचार उसको बहुत ही ज़्यादा डिस्टर्ब करते हैं, जिससे वो थक जाता है। अगर इसको आध्यात्मिक भाषा में कहें तो बहुत ज़्यादा व्यर्थ विचारों का चिन्तन, पुरानी बातों का चिंतन या जो भी चल रहा है या फिर आगे आने वाला है उसका चिंतन। उसके बारे में सोच-सोच कर जो हमारे अन्दर डिस्टर्बेंस शुरू होती है उसके कारण थकावट जबरदस्त होती है। तो सारी थकावट का राज़ चाहे वो विज्ञान के पहलू से, चाहे अध्यात्म के पहलू से देखा जाये तो उसका एक ही कारण है, वो है हमारे व्यर्थ संकल्प चलना। एक विचार से दूसरे विचार में जाना, एक इमेज से दूसरी इमेज में जाना, एक संसार से दूसरे संसार में जाना ये हमारे अन्दर दिन-रात चलता रहता है। और यही हमारे थकने का सबसे बड़ा कारण है। आप जिस समय जो काम कर रहे हैं, उसे उस समय ही करिए। उसके बाद दूसरा काम करना है तो उसको छोड़िए दूसरे पर लग जाइये, दूसरा काम पूरा हुआ उसको छोड़िए तीसरे पर लग जाइये तो कहने का मतलब है कि जिस समय जो कार्य ज़रूरी है उस समय उसी कार्य को करना है, न कि बुद्धि में रखना है कि और भी काम करना है। न कि हमें बैठ के अलग-अलग तरह के थॉट क्रियेट करके अपने आपको थका लेना है।

आप इसको प्रैक्टिकल एक्सपीरियंस कर सकते हैं। सोच के देख सकते हैं कि जब मैं कभी थकता हूँ या परेशान होता हूँ तो उसका रिज़न क्या है। बैठे-बैठे ऑटोमेटिक बिना सोचे-समझे हमारे विचार इधर-उधर चलने लग जाते हैं। तो मुश्किल से 10-12 सेकण्ड बाद जो काम कर रहे होते हैं तो उसमें भी हमारा मन नहीं लगता। व्यर्थ संकल्पों से थकावट का बहुत गहरा कनेक्शन है। इसीलिए अधिक से अधिक उस काम में फोकस करिए जो काम आप कर रहे हैं, नहीं तो अध्यात्म ये कहता है कि व्यर्थ संकल्प चलने के बाद हमारी आवाज़ से लेकर हमारे शरीर के एक-एक अंग में भी कमज़ोरी आती है क्योंकि जो विचार आपके लिए अनुकूल नहीं हैं, आपके साथ उसका कोई कनेक्शन नहीं है, उसके बारे में सोचकर एनर्जी को वेस्ट करना हमारे लिए कहा जाता है कि बहुत नुकसानकारक हो सकता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

परमात्मा के जो महावाक्य चलते हैं ब्रह्माकुमारीज़ में, उसमें आप सुनेंगे तो परमात्मा कहते हैं कि जैसे कोई व्यक्ति योग कर रहा है और योग में अलग-अलग तरह की बातें सोच रहा है तो वो बातें पूरे वातावरण में स्प्रेड हो रही हैं। पूरे वातावरण में बीच-बीच में फैलती जा रही हैं। और जब वो बातें अधिक से अधिक वातावरण में फैलती हैं, वातावरण में जाती हैं तो आस-पास जो योग कर रहे होते हैं उनका भी योग नहीं लगता।

तो आप सोचिए कि हमारे व्यर्थ संकल्प भी कितने शक्तिशाली हैं कि व्यर्थ जब सोच रहे हैं तो ऐसे कितने लोगों को थकाने के निमित्त हम बन रहे हैं! अगर उनका मन योग में नहीं है उनका मन काम करने में लग रहा है तो उनके लिए हम कारण बन जा रहे हैं। इसलिए अधिक से अधिक समर्थ संकल्प माना कि मैं अच्छा हूँ, मैं जो कर रहा हूँ परफेक्ट हो, उसमें कम्पलीट अपने आपको फोकस करूँ, कुछ अच्छी प्वाइंट्स को इकट्ठा करके उस पर काम करूँ। अधिक से अधिक समर्थ संकल्पों में जीवन बिताएं। जितने कम से कम संकल्प उतना ज़्यादा एनर्जेटिक, उतना ज़्यादा पॉवरफुल हम बन सकते हैं तो इस तरह से अपने ऊपर काम करके अपने आपको शक्तिशाली बनाइए। और साथ ही साथ दूसरों को भी सहयोग दें तो बहुत अच्छा है।

जीवन दर्शन

सम्पूर्ण निरहंकारी

मम्मा ने कभी अपना शो (दिखावा) नहीं किया। वह कितनी सेवा करती थीं लेकिन कभी अपने मुँह से ये नहीं कहा कि मैंने इतनी सेवा की। मम्मा डेढ़ मास सेवा करके बैंगलोर से पूना आयीं थी। उन्होंने बहुत सेवा की थी परन्तु फिर भी नहीं सुनाया कि ये-ये सेवा करके आयी हूँ। जो भाई उनको लेने गया था, उसी ने सभी भाई-बहनों को थोड़ा सुनाया था। तब बच्चों ने मम्मा से पूछा, तो उन्होंने कहा, 'सेवा अच्छी थी'। इतना ही कहा, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। इस प्रकार मम्मा अपने बारे में, किये हुए कार्य के बारे में कभी दूसरों को नहीं बताती थीं। वें जितना त्यागी थीं, उतनी ही वैरागी थीं और उतनी ही तपस्वी थीं।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

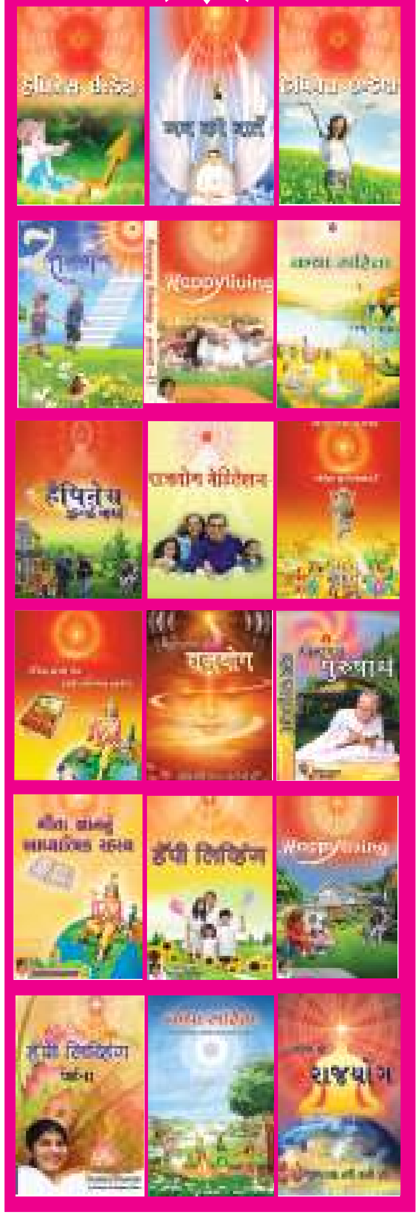

मन की बातें

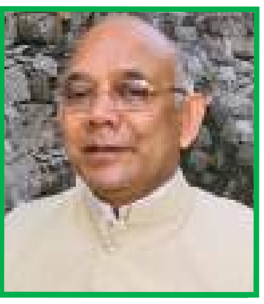

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न - मेरा नाम अनुराग है। मैं एक ही एग्ज़ाम में दो बार फेल हो चुका हूँ। मैंने मेहनत बहुत की लेकिन मैं असफल रहा। अब फिर से मैं उसी एग्ज़ाम के लिए खूब तैयारी कर रहा हूँ लेकिन मन में कहीं न कहीं असफल होने का एक डर बैठा हुआ है कि कहीं मैं फिर से असफल ना हो जाऊं। ये मुझे डिस्टर्ब कर देता है। कृपया बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : अब आपको मानसिक रूप से हेल्दी हो जाना चाहिए। क्योंकि आपको अभी अनुभव हो गया है। अब आपको इस रूप में सोचना चाहिए कि मुझे दो बार का अच्छा अनुभव है एग्ज़ाम देने का। एग्ज़ाम तो दिया ना, सफलता-असफलता एक अलग चीज़ है। कैसे रहना चाहिए, कैसे देना चाहिए, ये तो अनुभव हो गया ना! और अब यही अनुभव मुझे सफल करायेगा। ये सोचकर आगे चलें। और रोज़ सवेरे जल्दी उठकर 7 बार याद किया करें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इससे आप में साहस आयेगा, आप में हिम्मत आयेगी। आप बहुत उमंग-उत्साह में भी रहेंगे। मुझे असफलता ना हो जाये ये संकल्प बिल्कुल मन से निकाल देना है। इस बार मुझे सफलता ज़रूर मिलेगी, यही संकल्प आपको करना है। तो निश्चित रूप से हमें पूर्ण विश्वास है कि आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

प्रश्न : मेरा नाम दीपा गुप्ता है। क्या आत्मघात करने को ड्रामा में नूंध है ऐसा नहीं कहा जायेगा? हम ये जानते हैं कि सबकुछ ड्रामा में फिक्स है तो आत्मघात करना ये भी तो ड्रामा में नूंधा ही हुआ है ना! अगर ऐसा है तो फिर हम ऐसा क्यों कहते हैं कि आत्मा भटक जायेगी, अकाले मृत्यु है जबकि ये ड्रामा में फिक्स है?

उत्तर : ड्रामा में तो सबकुछ फिक्स है ही। और ये भी फिक्स है कि इस तरह से सुसाइड करने वाली आत्मायें भटक जाती हैं। इसीलिए ये नहीं कहा जायेगा कि भटक क्यों जाती हैं। उसका भटकने का जो असली कारण है वो ये होता है कि कोई भी मनुष्य की मृत्यु जब होती है, वो जिस स्थिति में होता है वही मनोस्थिति कंटिन्यू रहती है आगे भी। गर्भ में वो आत्मा जायेगी तो उसी मनोस्थिति को लेकर। अब एक व्यक्ति जो सुसाइड कर रहा है न जाने वो कितने समय से दुःखी, निराश, अशांत और बहुत दयनीय मनोस्थिति में रहा होगा! जब वो अपने को कंट्रोल नहीं कर पाया कि अब कुछ नहीं हो सकता तब वो निर्णय लेता है मृत्यु का। अभी उस टाइम जो उसकी मनोस्थिति होती है वो बहुत ही दुखभरी, बहुत अशांति से भरी या किसी से बदला लेने की कामना से भरी हुई होती है। जिसके कारण उसका चित्त शांत नहीं होता। फिर वो भटकते हैं। इसीलिए उसका पुनर्जन्म तब तक नहीं हो सकता जब तक देह छोड़ने के बाद उस आत्मा का चित्त शांत ना हो जाये, तो ये कारण है उनके भटकने का। ये सत्य है कि आपके जीवन में जो घटनायें घटी वो भी ड्रामा में थीं। सुसाइड करना भी ड्रामा में और अब भटकना भी ड्रामा में। ये ड्रामा तो सम्पूर्ण है। कर्म और फल यही तो ड्रामा है ना! तो उसका फल भी उसको अवश्य मिलता है।

प्रश्न : मैं बीएससी सेकण्ड ईयर की स्टूडेंट हूँ। मेरे एग्ज़ाम चल रहे हैं लेकिन मैं बिल्कुल भी एकाग्र नहीं हो पा रही हूँ। जब मैं पढ़ने बैठती हूँ तो मेरा ध्यान कहीं ओर चला जाता है। पुरानी बातें याद आने लगती हैं, सुबह उठने की कोशिश करती हूँ तो सुबह उठ भी नहीं पा रही हूँ। मैं बड़ी परेशान हूँ, क्या करूँ?

उत्तर : रोज़ सवेरे उठकर मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है ये 7 बार याद करें। 10 मिनट इसका अभ्यास कर लें। एक अभ्यास जो मैं आपको बता रहा हूँ जो सभी विद्यार्थियों के लिए है। मैं आत्मा हूँ, इस देह की मालिक हूँ, स्वराज्यधिकारी हूँ, यानी अपनी मालिक हूँ, स्वयं पर राज करने वाली हूँ। मन-बुद्धि दोनों की मालिक हूँ। अब जैसे ही आप पढ़ने बैठें ये अभ्यास करें और ऑर्डर दें मन को कि हे मेरे मन, अब मुझे स्टडी करनी है तो तुम शांत बैठ जाओ। जैसे छोटे बच्चों को बैठा देते हैं ना कि तुम इधर बैठ जाओ। हे मेरी बुद्धि, तुम एकाग्र हो जाओ। जो मैं पढ़ूं वो सबकुछ याद कर लेना और परीक्षा के समय सब इमर्ज कर देना। ये आपको दिन में 4-5 बार अभ्यास करना है। आप स्टडी करें और बार-बार ये अभ्यास करें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, ये भी करते रहें। इससे भय भी खत्म होगा और इससे एकाग्रचित्त भी होंगे। और जब आप हॉल में बैठें और पेपर सामने आ गया है या आ रहा है उससे पहले आप पुनः ये-ये अभ्यास कर लें। मेरी बुद्धि तुम एकदम एकाग्र और मेरे मन तुम एकदम शांत। हे मेरी बुद्धि, जो मैंने पढ़ा है अभी तक सब इमर्ज कर देना और तुम्हें सभी प्रश्नों के उत्तर परफेक्ट देने हैं। अपनी बुद्धि को जैसे ही ये आदेश दिया तब आपको ये महसूस होगा कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये अभ्यास करके सारी शक्तियां इमर्ज हो गई। फिर मैं स्वराज्यधिकारी हूँ - खुद के राजा बन गये। बुद्धि को आदेश दिया जो पढ़ा सब इमर्ज कर दो। हर प्रश्न का उत्तर परफेक्ट, एक्यूरेट देना। कहीं गलती ना होने पाये। बुद्धि उस डायरेक्शन में काम करने लगेगी। बस ये करेंगे तो डर की कोई बात ही नहीं। सबकुछ अच्छा होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:50 AM Page 7

त्याग में छिपा है परम भाग्य

कर्म करो, पुरुषार्थ करो और कर्म के साथ त्याग-वृत्ति हो। यह नहीं कि मैंने इतने कर्म किये हैं, मेरी कोई प्रशंसा ही नहीं करता। मुझे कोई अवार्ड (पुरस्कार) ही नहीं देता। मैंने इतना कुछ किया है उसके लिए, मुझे कोई पद ही प्राप्त नहीं होता।

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

त्याग तो एक वृत्ति-विशेष का नाम है

आमतौर से भाग्य हम वहाँ कहते हैं जिसके पीछे कोई न कोई, कभी न कभी त्याग ज़रूर होता है। हम जो कर्म करते हैं, अगर हरेक कर्म के साथ हमारी त्याग की भावना समायी हुई हो, कर्म को हमने त्याग का पुट दिया हुआ हो तो वही कर्म कई गुना फलदायक हो जाता है। कर्म का फल तो मिलता ही है। जैसा आप करेंगे वैसा पायेंगे, जैसा बीज बोयेंगे वैसा फल काटेंगे, यह तो कर्म-सिद्धान्त है। हमारे कर्म का फल शाश्वत है, अटल है, वह मिलता ही है। यह तो एक समीकरण बना हुआ है लेकिन जिस कर्म में त्याग की भावना होगी, दूसरे को सुख देने की भावना होगी, दातापन की क्वालिटी होगी, अपने स्वार्थ से नहीं किया होगा, अपने समय को, अपने धन को, अपने शरीर को लगा के दूसरे का जीवन बनाने की भावना होगी, दूसरों के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना समायी हुई होगी, वो कर्म त्यागमय कर्म होगा। कर्म करो, पुरुषार्थ करो और कर्म के साथ त्याग-वृत्ति हो। यह नहीं कि मैंने इतने कर्म किये हैं, मेरी कोई प्रशंसा ही नहीं करता। मुझे कोई अवार्ड (पुरस्कार) ही नहीं देता। मैंने इतना कुछ किया है उसके लिए, मुझे कोई पद ही प्राप्त नहीं होता। लोग समझते ही नहीं हैं, जानते ही नहीं हैं कि मैंने इतना कुछ किया है। यह त्याग की भावना नहीं है। ऐसे कर्म का श्रेष्ठ फल नहीं होता। हम कर्म के सिद्धान्त को समझते हैं, कर्म की गति को जानते हैं कि कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म क्या है, लेकिन चलते-चलते हमारी समझ में यह अभाव आ जाता है, यह कमी आ जाती है कि त्याग से भाग्य बनता है। त्याग की भावना से हमारे कर्म का फल कई गुना बढ़ जाता है। लेकिन हम त्याग इसी भावना से नहीं करते कि कर्म का फल बढ़ जाये। त्याग तो एक वृत्ति-विशेष का नाम है। दूसरे का सुख देखकर सुख महसूस करना-यह मनुष्य जीवन का एक उत्तम गुण है। कहीं तो ऐसा भी होता है कि दूसरे को बढ़ता, चढ़ता देखकर ईर्ष्या आती है। किसी संस्था की प्रगति और प्रशंसा देखकर, सुनकर लोग विरोध करते हैं, ईर्ष्या-द्वेष करते हैं। हमारी संस्था के बारे में भी क्या हुआ कि जब हमारे यहाँ आने वाले लोगों की संख्या ज़्यादा होने लगी तो अन्य संस्था वालों ने क्या किया? विरोध किया ना! क्योंकि उनके यहाँ जाने वालों की संख्या कम होने लगी। कोई न कोई नुक्स निकाल कर संस्था के खिलाफ प्रचार करना शुरू किया। उनके मन में खुशी नहीं होती थी। यह तो ईर्ष्या है लेकिन दूसरे को बढ़ता हुआ देखकर, उन्नति को प्राप्त हुआ देखकर, उसमें मनुष्य सहयोगी बने और उसके प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखें, मन में उसके प्रति ईर्ष्या और द्वेष न हो-यह त्याग की वृत्ति है।

स्थूल त्याग तो हर कोई कर भी लेता परन्तु त्याग करने के पीछे उनके मनोभाव में भी त्याग का भी त्याग न हो। हमारा परमभाग्य व पदमापदम भाग्य तब बनता जब स्थूल और सूक्ष्म में भी उस त्याग के भान से परे हों।

त्यागमय जीवन की झलक दिखाई दी

ब्रह्मा बाबा का जीवन हमारे सामने आदर्श है। उनके जीवन में मुझे सबसे पहले 'त्यागमय जीवन' की झलक दिखाई पड़ी। कहाँ जवाहरी जीवन, जिसमें सब वस्तु, वैभव प्राप्त थे और उसके बाद ऐसा त्यागमय जीवन! अभी आप बाबा के कमरे में जाते हैं, अभी तो कई दीवारें निकाल कर उसको बढ़ाया गया है। बाबा का जो पहले वाला कमरा था, जिसमें सृष्टि के आदि पिता रहते थे, उसको देखकर आपको आश्चर्य होता कि क्या यह उनका कमरा है! अभी तो उसमें कृत्रिम सीलिंग है, अगोचर लाइट्स हैं, बैठने के लिए फोम और सोफे डाले हुए हैं। बाबा का छोटा-सा बाथरूम और छोटे-छोटे सामानों को हटाकर उस कमरे को मॉडर्न (आधुनिक) रूप से बनाया गया है। आपको देखने में आता है कि यह बाबा का कमरा है। बहुत वर्षों तक बाबा के कमरे में पंखा तक नहीं था। इसका मतलब यह नहीं है कि जानबूझकर हमें जीवन में हठयोग करना है। लेकिन ऐसा भी नहीं कि हम ये सब सुविधायें प्राप्त कर लें। सुविधायें तो दुनिया में बहुत हैं। विज्ञान कोशिश कर रहा है कि और अधिक सुख के साधनों का आविष्कार होता रहे। साधनों के मॉडल्स(नमूने)भी बदलते जायेंगे। आज एक कार लेंगे, कल सुबह तक दूसरे मॉडल की कार आ जायेगी मार्केट में। आप सोचेंगे, इस कार को निकाल करके दूसरी ले लेंगे। जब यह भावना मनुष्य के जीवन में आने लगेगी तो यहाँ से ही उसका भोगी जीवन शुरू हो जायेगा। भविष्य में उसको कुछ प्राप्त होने वाला नहीं।

जीवन का सत्य

यही पुरुषोत्तम संगमयुग है जो भाग्य प्राप्त करने का अच्छा चांस है, क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप साथ है। फिर यह बाप साथ नहीं रहेगा, न ऐसी प्राप्ति रहेगी। जितना चाहो उतना भाग्य बना सकते हो। संगमयुग पर परमात्मा ज्ञान देते हैं और श्रेष्ठ कर्म सिखलाते हैं। उसके अनुसार जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे हमारा पुण्य का खाता जामा होता है। और इस समय परमात्म याद से आधे कल्प का पाप का खाता खत्म हो जाता है इसलिए सतयुग-त्रेता में आत्मायें सदा खुश रहती हैं। संगमयुग पर पुरुषार्थ करके जो आत्मिक शक्ति का खाता जमा करते हैं, वह आत्मिक शक्ति का खाता चलता तो सारे कल्प है परन्तु द्वापर से दोनों प्रकार के खाते चलना शुरू हो जाते हैं अर्थात् आत्मायें अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म करती हैं, इसलिए दोनों प्रकार के खाते चलते हैं, जिससे आत्मा के सुख और दुःख दोनों शुरू हो जाते हैं। पुण्य कर्म का भी फल मिलता है तो पाप कर्म का भी फल मिलता है।

दिल्ली-सीताराम बाजार। रक्षाबंधन पर्व पर पुलिस स्टेशन में एस.एच.ओ. सुनील कुमार व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. गुंजन।

टूंडला-जीवनी नगर(उ.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ प्रगतिशील समाजवादी पार्टी,पूर्व ब्लॉक प्रमुख प्रकाश चंद्र मौर्य को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू।

मुजफ्फरपुर-मोतिहारी(बिहार)। रक्षाबंधन पर्व पर सेवाकेन्द्र में क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. रानी दीदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना।

वारंगल-तेलंगाना। जन्माष्टमी पर्व पर सजाई चैतन्य झांकियों के साथ हैं उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सविता तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

दिल्ली-इंद्रपुरी। जन्माष्टमी पर्व पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा सजाई चैतन्य झांकियां।

दिल्ली-सीताराम बाजार। जन्माष्टमी पर्व पर सजाई राधे-कृष्ण की चैतन्य झांकी के साथ हैं ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. गुंजन।

बवासीर का इलाज आपके घर में ही

स्वास्थ्य

किसी व्यक्ति के पेट में लम्बे समय तक गैस और कब्ज की शिकायत रहती है तो लाज़मी है कि उस व्यक्ति को बवासीर की शिकायत हो जाती है। बहुत से ऐसे लोग हैं जो कि इस बीमारी के बारे में डॉ. को खुल कर नहीं बता पाते हैं या बताने में शर्माते हैं। लेकिन ज़रा सोचिए अगर आप ऐसे ही सोचते रहेंगे तो आप इस बीमारी से बहुत ही ज़्यादा ग्रसित हो जायेंगे और फिर आपको बहुत ज़्यादा परेशानी होगी कि आप सह भी नहीं पायेंगे। इस बीमारी में बहुत ही ज़्यादा दर्द होता है।

बवासीर दो प्रकार की होती है

1. खूनी बवासीर

2. बादी बवासीर

परन्तु घबराइये नहीं हम आपको एक घरेलू नुस्खा बताते हैं जिसके इस्तेमाल करने से आपकी जो बवासीर यानी कि जो दर्दनाक बीमारी है इस बीमारी से आप आसानी से छुटकारा पा सकते हैं।

सामग्री -

1. जीरा,

2. मोटी सौंफ

जीरा - इस जीरे में कुछ ऐसी प्रॉपर्टीज होते हैं जो कि पेट से गैस और कब्ज को खत्म करके साथ ही साथ आपको अगर खूनी बवासीर की शिकायत है तो उसे ये दूर करने में मदद करती हैं।

मोटी सौंफ - सौंफ में कुछ ऐसी प्रॉपर्टीज पायी जाती हैं जो कि हमारे पेट में गैस और कब्ज की समस्या को बहुत ही आसानी से दूर करने में मदद करती है। साथ ही साथ ये एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है। जो हमारे पेट की पाचन शक्ति को मजबूत करती है।

लेने की विधि

रात को एक गिलास गुनगुना पानी लेकर उसमें दो चम्मच जीरा और दो चम्मच सौंफ मिक्स कर दीजिए। और रातभर भिगने के लिए छोड़ दीजिए। और जब सुबह उठें तो छननी की सहायता से पानी को अलग कर लें। उस पानी में आधा निम्बू निचोड़ लें और फिर उसको अच्छे से मिक्स कर लें। अभी आपका ये दृव्य तैयार है और सुबह फ्रेश होने के पश्चात खाली पेट इस दृव्य को पी लें। उसके पश्चात एक घंटे तक कुछ भी न लें। एक घंटे पश्चात ही आप नाशता लें। सात दिन तक इस प्रक्रिया को दोहराते रहें। आपकी बवासीर की शिकायत और पेट में जो तकलीफ है वो खत्म हो जायेगी। इससे आपको राहत मिलेगी।

OM-12-2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 22/09/2020 9:50 AM Page 8

वेबिनार के ज़रिए मनाया जन्माष्टमी महोत्सव

नागपुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा वसंतनगर स्थित सेवाकेन्द्र पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। वर्तमान वातावरण और समय को देखते हुए यू-ट्यूब के द्वारा सभी भाई-बहनों ने सुंदर झांकियों एवं सांस्कृतिक नृत्य का आनंद लिया। इस कार्यक्रम के उपलक्ष्य में यू-ट्यूब के माध्यम से जुड़ीं इलाहाबाद से धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री कृष्ण ने हर बात पर बहुत ही सकारात्मकता से, प्रेम से, सहज और सुलभ भाव से विजय प्राप्त की। ठीक हमें भी उनके जीवन से सीख लेकर अपने वर्तमान जीवन में उतारने की आवश्यकता है। नागपुर क्षेत्र से ब्र.कु. रजनी दीदी ने कहा कि जैसे कृष्ण को हमेशा मटकी फोड़ व माखन खाते हुए दिखाते हैं। इसका वास्तविक रहस्य इस कलियुग के अंतिम चरण में परमात्मा हमें बताते हैं कि माखन कौन-सा खाया और मटकी कौन-सी फोड़ी। परमात्मा हमें ज्ञान रूपी माखन खिलाते हैं जिससे श्री कृष्ण की तरह हमारे अन्दर भी वो गुण आ जाते हैं। हमारे अंदर के देहभान की मटकियों को तोड़कर श्री कृष्ण की दुनिया में चलने के लायक बनाते हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सह-संचालिका,नागपुर ब्र.कु. मनीषा दीदी, ब्र.कु. प्रेम प्रकाश आदि ने मिलकर मनोरम झांकियों का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन किया। अंत में दही हांडी का कार्यक्रम भी रखा गया। जिसका संचालन ब्र.कु. दमयंती ने किया। इस कार्यक्रम में यू-ट्यूब के माध्यम से लगभग 5000 लोग जुड़े।

विघ्न विनाशक बनने के लिए श्री गणेश के जीवन से सीख लेने की ज़रूरत...

रायपुर-छ.ग.। गणेश चतुर्थी के उपलक्ष्य में वेबीनार द्वारा ब्र.कु. रश्मि ने कहा कि श्री गणेश की तरह जीवन को विघ्न विनाशक और महान बनाने के लिए उनके जीवन से सीख लेने की आवश्यकता है। उनका व्यक्तित्व अनेक रहस्यों को समेटे हुए है। हम वर्षों से उनकी पूजा करते आए हैं किन्तु फिर भी जीवन में बुराइयां व्याप्त हैं। जब उनके गुणों और विशेषताओं को धारण करेंगे तब हमारा जीवन भी उनके समान मंगलकारी बन जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि श्री गणेश जी को सफलता का दूत माना जाता है। लोग बड़ी श्रद्धा से उनकी स्थापना कर पूजा करते हैं, लेकिन आज हम उनके पीछे छिपे आध्यात्मिक रहस्य को समझने का प्रयास करेंगे। जो कि बहुत ही गहरा और सूक्ष्म है।

सृष्टि के इतिहास में ऐसा भी समय आता है कि जब हम मनुष्य आत्माएं देह अभिमान में आकर परमात्मा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं का विरोध करने लग जाते हैं। तब वह हमारे देह अभिमान रूपी अहंकार को खत्म कर एक नयी दिव्य और श्रेष्ठ बुद्धि हम सबको देते हैं। जब हम ज्ञानयुक्त और श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा कार्य करते हैं तो हमारा हरेक कर्म श्रेष्ठ हो जाता है, इसलिए गणेश को बुद्धि का देवता भी कहा गया है। उनका भव्य मस्तक बुद्धिमत्ता का सूचक है। उनकी घुमावदार सूंड से शिक्षा मिलती है कि जीवन में परिस्थितियों के अनुसार हमें भी लचीला और मजबूत बनना है। उनको एकदन्त भी कहा जाता है।

यह ये शिक्षा देता है कि हम सभी को एक समान समझें। किसी से भेदभाव न करें। गणेश जी का बड़ा पेट समाने की शक्ति का प्रतीक है। कोई व्यक्ति जब किसी बात को अपने अन्दर नहीं समा पाता तो कहने में आता है कि इसके पेट में तो कोई बात पचती ही नहीं है। जब हम अपने जीवन में समाने की शक्ति को धारण करते हैं तो अनेक प्रकार के मनमुटाव और रिश्तों में कड़वाहट से बच जाते हैं। उन्होंने कहा कि गणेश के कान सूपे जैसे होते हैं जो कि हमें शिक्षा देते हैं कि सूपे की तरह अच्छाइयों को धारण करना है और बुराइयों को निकाल फेंकना है। उनके एक हाथ में कुल्हाड़ी दिखाते हैं ताकि उनके समान अपने जीवन में नेगेटिविटी को काटकर फेंक सकें। एक अन्य हाथ में कमल का फूल दिखाते हैं। जिस तरह कमल का फूल कीचड़ में रहते हुए भी उससे अलग ऊपर उठा हुआ रहता है, उसी तरह हमें भी अपने जीवन को संसार रूपी कीचड़ में रहते हुए कमल फूल की तरह न्यारा और प्यारा बनाना है।

तिरंगे के मर्म को समझें

रोहित नगर-भोपाल(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बावड़िया कला स्थित रोहित नगर सेंटर में 15 अगस्त, स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी ने ध्वजारोहण के पश्चात् अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तिरंगे में तीन रंग हैं। ये तीन रंग हमें बहुत बड़ा सन्देश देते हैं। केसरिया रंग ज्ञान और बलिदान का है, हमारे घर परमधाम का कलर भी रेड है, सफेद रंग शांति और पवित्रता का प्रतीक है, हरा रंग प्रेम और खुशहाली का प्रतीक है। आज के दिन भारत के झंडे के नीचे हम प्रतिज्ञा करते हैं कि उन वीर जवानों ने तो अपनी जान की कुर्बानी दी, हम अपने अन्दर के मनोविकारों की कुर्बानी देकर भारत को स्वर्ग बनाकर ही छोड़ेंगे। तभी सही अर्थ में स्वतंत्रता दिवस मनाना सार्थक होगा। कोरोना वायरस को हराने के लिए हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाना होगा। शक्तिशाली बनने के लिए ज्ञान, गुण और शक्तियों से भरपूर होना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम बहुत ही उमंग-उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गाया। जिसमें सेंटर पर समर्पित भाई-बहनों ने कोरोना वायरस पर बहुत ही सुन्दर एक नाटक की प्रस्तुति दी।

नाटक में भारत माता, पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सफाई कर्मचारी कोरोना वायरस को जड़ से खत्म करते हुए दिखाया गया है।

विकट परिस्थितियों को श्री कृष्ण की तरह मुस्कुराते हुए पार करें

छतरपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जन्माष्टमी कार्यक्रम ऑनलाइन यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से मनाया गया। ब्र.कु. रमा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि जैसे श्री कृष्ण किसी से भयभीत नहीं हुए, विकट परिस्थितियों में भी मुस्कुराते रहे, ऐसे ही हमें भी हमारे सामने आई ये महामारी कोरोना से डरना नहीं है बल्कि सावधानी बरतते हुए अपने को खुश रखना है। साथ-साथ डॉक्टर द्वारा बताये गये नियमों का पालन करेंगे तो अवश्य ही कोरोना को मात दे सकेंगे। कार्यक्रम में खजुराहो सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या ने भी अपने विचार रखे तथा क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शैल्जा दीदी ने श्री कृष्ण के आध्यात्मिक रहस्य से अवगत कराया तथा सभी का धन्यवाद किया। ब्र.कु. रीना एवं ब्र.कु. रुपा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. कल्पना ने किया।

मनभावक मनमोहन के आकर्षण के राज़ को जानें

सादाबाद-उ.प्र.। श्री कृष्ण के आध्यात्मिक रहस्य को समझाते हुए ब्र.कु. भावना ने कहा कि श्री कृष्ण जैसा मनमोहक, आकर्षक व सदा हर्षितमुख और निश्चिंत रहने वाला और कोई भी नहीं है। इसके गुह्य रहस्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सत्यम-शिवम-सुन्दरम परमात्मा शिव जब इस वसुन्धरा पर नई दुनिया बनाते हैं तब श्री कृष्ण जैसे शक्तिशाली और सर्वगुण सम्पन्न बनाते हैं, जिसको आज हम भूल नहीं पा रहे हैं। उनकी दिव्यता, शालीनता आज विश्व के हर कोनों में पाई जाती है। ऐसी सुन्दर परमात्मा की रचना को देखने के लिए कौन भला लालायित नहीं होगा! अगर हमें भी ऐसी नगरी में अपना अस्तित्व दर्ज कराना है तो हमें भी परमात्मा की शिक्षाओं का अपने जीवन में अनुसरण करना होगा। ज्ञान और योग बल से अपने को संवारना होगा।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Sep, 2020
स्वामी - प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, प्रकाशक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प.लि.,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित, सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org